Part-II

Paper-IV — गृह व्यवस्था (लक्ष्य)

HOME SCIENCE

लक्ष्य :- पारिवारिक जीवन में सुख, संतोष एवं सफलता पाने के लिये लक्ष्यों को प्राप्त करना आवश्यक है। लक्ष्य चाहे छोटे हों अथवा बड़े, प्रत्येक परिवार उन्हें पाने की चेष्टा करता है। लक्ष्य मूल्यों की अपेक्षा अधिक निश्चित होते हैं क्योंकि इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। लक्ष्य इच्छाओं, दार्शनिकताओं, अभिरुचियों और मूल्यों से उत्पन्न होते हैं। लक्ष्य प्राप्ति पर व्यक्ति प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

अर्थ :- लक्ष्य एक उद्देश्य है जिसकी प्राप्ति के लिये हम तत्पर रहते हैं तथा नई सूचनाओं, तकनीकों का सहारा लेते हैं। सामान्य अर्थों में लक्ष्य जीवन के साध्य होते हैं जिन्हें प्राप्त करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्नशील रहता है।

परिभाषाएँ :-

निकिल एवं डार्सी के अनुसार : "सामान्य अर्थों में लक्ष्य वह बिन्दु होता है जहाँ तक व्यक्ति या परिवार द्वारा कार्य करने की इच्छा रखी जाती है"।

लक्ष्य निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती रहती है। यह मानव का स्वभाव है कि एक लक्ष्य की प्राप्ति होने पर दूसरा लक्ष्य बना लेता है। इच्छित लक्ष्य प्राप्त न होने पाने की स्थिति में वह अपने वह अपने कार्यक्रम, इच्छाओं और रुचियों में परिवर्तन/सुधार करता है ताकि वह लक्ष्य प्राप्त कर सुख की अनुभूति प्राप्त कर सके

लक्ष्यों की विशेषताएँ :-

लक्ष्यों की निम्न विशेषताएँ है

(1) लक्ष्य सतत चलने वाली एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जैसे ही एक लक्ष्य की पूर्ति होती है, मनुष्य द्वारा दूसरे लक्ष्य का निर्माण किया जाता है।

(2) लक्ष्य समय बाध्य होते हैं। कुछ लक्ष्य तत्कालिक एवं अल्पकालिक होते हैं जिन्हें समय पर पूरा करना आवश्यक होता है अन्यथा उनकी वैधता समाप्त हो जाती है। जबकि कुछ लक्ष्य जीवन पर्यन्त चलते रहते हैं।

Date :
Page :

(3) लक्ष्य सदैव एक समान नही होते अर्थात लक्ष्य बदलते रहते हैं।
(4) लक्ष्यों की उत्पत्ति मूल्यों से होती है।
(5) लक्ष्यों से व्यक्तित्व का विकास होता है।
(6) लक्ष्य व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार के होते हैं।
(7) लक्ष्य व्यवहारवादी एवं यथार्थवादी होते हैं।
(8) लक्ष्य सामाजिक मूल्यों से प्रभावित होते हैं।
(9) लक्ष्य पारिवारिक जीवन चक्र को प्रभावित करते हैं।
(10) लक्ष्य मनुष्य की आशाओं का प्रतिबिम्ब है।

लक्ष्यों का वर्गीकरण :- दीर्घकालीन लक्ष्य :-
यह एक बहुत लम्बी समयावधि तक चलने वाले लक्ष्य हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिये बहुत अधिक प्रयास करना पड़ता है। दीर्घकालीन लक्ष्य परिवार को वास्तविक अर्थ प्रदान करते हैं और सम्पूर्ण परिवार इन्हें अनुभव करता है। दीर्घकालीन लक्ष्यों को प्राप्त करना अत्यधिक कठिन होता है। बहुत बार छोटे-छोटे अल्पकालीन लक्ष्य मिलकर दीर्घकालीन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। दीर्घकालीन लक्ष्यों को अन्तिम महत्व बिन्दु लक्ष्य भी कहा जाता है। उदाहरण के लिये अपना मकान बनाना, बच्चों की शिक्षा, विवाह आदि।

मध्यकालीन लक्ष्य :-
ये लक्ष्य अल्पकालीन लक्ष्यों की प्राप्ति का एक साधन होते हैं और कम प्रयत्न द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं। वास्तव में ये लक्ष्य निर्णय लेने वाले अथवा मध्यवर्ती लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक चरण के रूप में रहते हैं।

अल्पकालीन लक्ष्य :- ये लक्ष्य कम समय हेतु निर्धारित किये जाते हैं। ये तुलनात्मक रूप से अधिक स्पष्ट होते हैं तथा इसके परिणाम कम समय में दृष्टिगोचर हो जाते हैं। कई बार अल्पकालीन लक्ष्य अधिक महत्व वाले नही होते। जैसे दैनिक जीवन के छोटे मोटे कार्य।

उपरोक्त सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये व्यक्ति एवं परिवार को जीवन पर्यन्त संघर्षरत रहना पड़ता है, साधनों का एकत्रिकरण करना पड़ता है एवं कठोर परिश्रम करना पड़ता है।